[9] Seat No: _____ No. of printed page: 1

SARDAR PATEL UNIVERSITY
M.A. (II - Semester) Examination
Monday, 18th March, 2019
10.00 am - 1.00 pm
PA02CHIN21 : रीतिकाव्य

कुल गुण : ७०

प्र.१ **किन्हीं दो** की ससंदर्भ व्याख्या कीजिए । (१८)

(क) नेहु न, नैननु, कौं कछू उपजी बड़ी बलाइ ।
नीत-भरे नितप्रति रहैं, तऊ न प्यास बुझाइ ।।
नहिं परागु नहिं मधुर मधु नहिं बिकासु इहिं काल ।
अली, कली ही सौं बंध्यौ, आगैं कौन हवाल ।।

(ख) हीन भएँ जल मीन अधीन, कहा कछु मो अकुलानि-समानै ।
नीर-सनेही कों लाय कलंक निरास हवै कायर त्यागत प्रानै ।।
प्रीति की रीत सु क्यों समुझै जड़, मीत के पानि परे कों प्रमानै ।
या मन की जु दसा, घनआनंद जीव की जीवनि जान ही जानै ।।

(ग) जगतसिंघ नृप जगतहित हरषि हियें निधि नेहु ।
कबि पद्माकर सों कह्यो सु रसग्रंथ रचि देहु ।।
जगतसिंघनृपहुकुम तें पाय महा मनमोद ।
पद्माकर जाहिर करत जगहित जगतविनोद ।।

(घ) माखन सो मन दूध सो जोवन है दधि ते अधिकै उर ईठी ।
जा छवि आगे छपाकर छाछ बिलोकि सुधा बसुधा सब सीठी ।।
नैनन नेह चुवै कवि देव बुझावति बैन बियोग अँगीठी ।
ऐसी रसीली अहीरी अहै, भला क्यौं न लगै मनमोहनै मीठी ।।

प्र.२ बिहारी की काव्यगत विशेषताएँ लिखिए । (१७)

अथवा

प्र.२ घनानंद के वियोग वर्णन को स्पष्ट कीजिए ।

प्र.३ देव के काव्यगत वैशिष्ट्य को उजागर कीजिए । (१७)

अथवा

प्र.३ पद्माकर का काव्य-परिचय प्रस्तुत कीजिए ।

प्र.४ **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए : (१८)

क) बिहारी की काव्यभाषा
ब) पद्माकर का श्रृंगार-निरूपण
क) देव की काव्यभाषा
घ) घनानंद का काव्य परिचय

--------X--------